St. Peter's Senior Secondary School

(Affiliated to C.B.S.E. No. 2630043)

CLASS–12 **(ASSIGNMENT–7)**

SUBJECT – HINDI

पाठ्यपुस्तक (आरोह भाग – 2)

पाठ- हरिवंश राय बच्चन (कविता)

शब्दार्थ :- कविता को समझने की कुंजी है, सबसे पहले उसके कठिन शब्दों को समझाना ।

संदर्भ किसे कहते हैं? :- कविता अथवा गद्य के अंश को व्याख्या के लिये जहाँ से लिया गया है, उस पाठ्य-पुस्तक का नाम, पाठ का शीर्षक और उसके रचनाकार की जानकारी देना ही संदर्भ कहलाता है।

प्रसंग किसे कहते हैं? :- जिस अंश को व्याख्या के लिये लिया गया है, उसमें कौन सा विचार, भाव या घटना का वर्णन है, इसकी जानकारी देना ही प्रसंग कहलाता है।

व्याख्या किसे कहते हैं? :- किसी कविता अथवा गद्य के अंश में व्यक्त विचारों और भावों को सरलतम विधि से समझाना ही व्याख्या करना कहलाता है।

(1)

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;

कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ !

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ !

शब्दार्थ :- जग-जीवन = संसार में जीवनयापन की क्रियाएँ । झंकृत = झनझनाने का संगीतमय स्वर। स्नेह-सुरा = प्रेम की शराब। पान = पीना। ध्यान करना = परवाह करना। जग की गाते = संसार के चलन की प्रशंसा करते। मन का गान करना = अपने मौलिक विचारों को रखना।

संदर्भ :- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित कविता 'आत्मपरिचय' से लिया गया है। इसके रचनाकार विख्यात कवि डॉ हरिवंश राय बच्चन हैं।

प्रसंग :- कवि इस काव्यांश में अपने और संसार के रिश्तों का उद्घाटन कर रहे हैं।

व्याख्या :- कवि बच्चन जी इस काव्यांश में अपने और संसार के मध्य के रिश्तों की विवेचना करते हुए कहते हैं कि यह संसार जिसमें मैं आया हुआ हूँ , उसका जीवन जीने का और जीवन के साथ व्यवहार करने का अपना एक पारंपरिक ढंग है। मैं उसकी इस शैली को अपने लिए अनुकूल नहीं पाता, इसलिये वह मेरे लिये भार स्वरूप ही है। जीवन जीने के बारे में मेरे अपने मौलिक विचार हैं, परंतु मैं सांसारिक तरीकों का निषेध भी नहीं करता, लिहाजा अपने सिर पर लाधने के लिये विवश हूँ । बावजूद इसके मैं अपने जीवन में उसके प्रति नफरत नहीं, प्यार ही रखता हूं। मेरा जीवन जिन साँसों पर निर्भर है, उसे अपनी संवेदना से

झंकृत कर देना वाला 'कोई' मधुर व्यक्तित्व भी मुझे इसी संसार से उपलब्ध हुआ है। उसने जीवन को संगीत की मधुरता से भर दिया है।

कवि अपना आत्मपरिचय देते हुए कहते हैं कि मैं इसी प्राप्त प्रेम की शराब को पिया करता हूँ । इसका नशा मुझे अलौकिक आनंद से सराबोर कर देता है। इसमें डूबे रहने के कारण मैं दुनिया के बारे में सोचता तक नहीं। इसी कारण से दुनिया ने मुझे उपेक्षित कर रखा है। संसार का ऐसा चलन है कि जो उसके राग में अपना राग मिलाना जानते हैं, संसार केवल उनका ही आदर किया करता है। मुझे भी उसके आदर की कहाँ दरकार है, मैं तो अपने मन के गीतों को ही गाने में मस्त हूँ ।

विशेष :- कवि ने संसार और अपने विचारों तथा शैली में भिन्नता को अभिव्यक्त किया है।

(2)

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए
मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

शब्दार्थ :- उर = हृदय। उद्गार = दिल के भाव। उपहार = भेंट। भाता = अच्छा लगता। स्वप्नों का संसार = कल्पनाओं की दुनिया। दहा = जला। भव-सागर = संसार रूपी समुद्र। तरने = पार करने। मौजों = लहरों।

संदर्भ :- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित कविता 'आत्मपरिचय' से लिया गया है। इसके रचनाकार विख्यात कवि डॉ हरिवंश राय बच्चन हैं।

प्रसंग :-कवि इस काव्यांश में संसार के प्रति अपने विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त कर रहे हैं।

व्याख्या :- कवि के हृदय में उनके अपने मौलिक विचार हैं। वे उन्हें व्यक्त करने के लिये व्याकुल रहते हैं। उनके पास संसार को देने के लिये अनोखे और अनुपम उपहार हैं, वे उन्हें संसार को भेंट कर देने के लिये उत्साह से भरे हुए हैं।

उनके सामने जैसा संसार है, उसमें उन्हें अधूरापन दिखायी देता है। इसी अधूरेपन के कारण यह दुनिया उन्हें अच्छी नहीं लगती। वे उसके अधूरेपन को दूर करना चाहते हैं। उनके मन में एक नए और संपूर्ण संसार के बारे में बहुत-सी कल्पनाएँ हैं। कवि चाहते हैं कि अपनी कल्पनाओं को साकार कर बेहतर दुनिया रचें।

कवि का कहना है कि अपूर्ण संसार को देखकर वे दुखी रहते हैं। एक आग-सी उनके अंदर सदैव जला करती है। इस आग को जलाने वाला कोई और नहीं, स्वयं वही हैं। अर्थात् चाहते तो जैसी दुनिया है, उसे वैसी ही स्वीकार कर चैन से रह सकते थे, पर उसमें बदलाव लाने की इच्छाओं ने उन्हें व्याकुल कर रखा है। उनके जीवन में अन्य लोगों की तरह ही सुख और दुख दोनों ही हैं, पर कवि सुख में अहंकारी नहीं होते और दुख में विचलित नहीं हो जाते। दोनों में ही एक प्रकार की मस्ती का अनुभव करते हैं।

वे कहते हैं कि लोग संसार रूपी समुद्र को पार करने के लिये नाव बनाना चाहें तो बनायें। इससे मोक्ष पाना चाहें तो पायें। इससे छुटकारा पाना चाहें तो इसके लिये वे स्वतंत्र हैं। पर मैं तो इस संसार को, अपने लिये अनुकूल होने पर भी, उसे सत्य ही मानता हूँ । वह मेरे लिये मिथ्या (झूठ) नहीं है। इसीलिये मैं संसार की लहरों पर ही रहना चाहता हूँ । रहना ही नहीं चाहता, बल्कि लहरों पर रहकर अपने को मस्ती से भरा हुआ भी पाता हूँ ।

विशेष :- कवि संसार को अधूरा अपने लिये अनुकूल महसूस नहीं करते, परंतु उससे मुक्ति भी नहीं पाना चाहते।

(3)

मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ ;
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं, हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ !

कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना?
नादान वहीं हैं, हाय, जहाँ पर दाना!
फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे?
मैं सीख रहा हूँ , सीखा ज्ञान भुलाना !

शब्दार्थ :- यौवन = जवानी। उन्माद = पागलपन। अवसाद = उदासी, खेद। यत्न = प्रयास। नादान = नासमझ, अनाड़ी। दाना = चतुर, ज्ञानी। मूढ़ = मूर्ख।

संदर्भ :- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित कविता 'आत्मपरिचय' से लिया गया है। इसके रचनाकार विख्यात कवि डॉ हरिवंश राय बच्चन हैं।

प्रसंग :- कवि इस काव्यांष में किसी अनाम की यादों और संसार की दशाओं का विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

व्याख्या :- कवि कहते हैं कि वे अपने अंदर युवावस्था की जो विशेष उमंग होती है, उन्हें सदैव ही वह अपने साथ लिये रहते हैं। पर उमंग में भी प्रेम की उदासियाँ हैं। इसके कारण वे दुनिया को दिखाने के लिये खुश रहा करते हैं, परंतु अंदर ही अंदर रोया करते हैं। इसका कारण है कि उनके हृदय में किसी प्रियजन की स्मृतियां बसी हुई हैं।

वे कहते हैं कि इस संसार में जीवन के सत्य को जानने की कोशिशें कर-कर के लोग मिट गये, परंतु कोई भी सत्य को नहीं जान सका। असल में जहाँ पर अपने को ज्ञानी समझने वाले लोग होते हैं, वही नादान भी होते हैं। ऐसे में उस संसार को मूर्ख ही कहना चाहिये, जो सीखने के प्रयासों में लगा हो। मैं तो जो ज्ञान पा चुका हूँ उसे भी भुला देना चाहता हूँ । अज्ञानी बने रहने में ज्यादा सुकून है।

विशेष :- काव्यांश में कवि के दार्शनिक भाव अभिव्यक्त हुए हैं। वे इस सत्य का उद्घाटन करते हैं कि जो ज्ञानी हैं, असल में वही सबसे बड़े नादान लोग हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

प्रश्न (1) :- कविता एक और जग-जीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ - विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय है ?

प्रश्न (2) :- जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं पर नादान भी होते हैं –कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा |

पाठ – भक्तिन

ASSIGNMENT 6 (ANSWER KEY)

प्रश्न (1) :- भक्तिन का वास्तविक नाम क्या था, वह अपने नाम को क्यों छुपाना चाहती थी?

उत्तर:- भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था, हिन्दुओं के अनुसार लक्ष्मी धन की देवी है। चूँकि भक्तिन गरीब थी । उसके वास्तविक नाम के अर्थ और उसके जीवन के यथार्थ में विरोधाभास है, निर्धन भक्तिन सबको अपना असली नाम लक्ष्मी बताकर उपहास का पात्र नहीं बनना चाहती थी इसलिए वह अपना असली नाम छुपाती थी।

प्रश्न (2) :- लेखिका ने लक्ष्मी का नाम भक्तिन क्यों रखा?

उत्तर:- घुटा हुआ सिर, गले में कंठी माला और भक्तों की तरह सादगीपूर्ण वेशभूषा देखकर महादेवी वर्मा ने लक्ष्मी का नाम भक्तिन रख दिया । यह नाम उसके व्यक्तित्व से पूर्णत: मेल खाता था ।

प्रश्न (3) :- भक्तिन पाठ के आधार पर भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में किये जाने वाले भेदभाव का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर:- भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में भेदभाव किया जाता है। लड़कियों को खोटा सिक्का या पराया धन माना जाता है। भक्तिन ने तीन बेटियों को जन्म दिया, जिस कारण उसे सास और जेठानियों की उपेक्षा सहनी पड़ती थी। सास और जेठानियाँ आराम फरमाती थी क्योंकि उन्होंने लड़के पैदा किए थे और भक्तिन तथा उसकी नन्हीं बेटियों को घर और खेतों का सारा काम करना पडता था । भक्तिन और उसकी बेटियों को रूखा-सूखा मोटा अनाज खाने को मिलता था जबकि उसकी जेठानियाँ और उनके काले-कलूटे बेटे दूध-मलाई राब-चावल की दावत उड़ाते थे ।

प्रश्न(4):- सिद्ध कीजिए कि भक्तिन तर्क-वितर्क करने में माहिर थी ।

उत्तर:- भक्तिन तर्कपटु थी । केश मुँडाने से मना किए जाने पर वह शास्त्रों का हवाला देते हुए कहती है 'तीरथ गए मुँडाए सिद्ध' । घर में इधर-उधर रखे गए पैसों को वह चुपचाप उठा कर छुपा लेती है, टोके जाने पर वह इसे चोरी नही मानती बल्कि वह इसे अपने घर में पड़े पैसों को सँभालकर रखना कहती है। पढाई-लिखाई से बचने के लिए भी वह अचूक तर्क देती है कि अगर मैं भी पढ़ने लगूँ तो घर का काम कौन देखेगा?

प्रश्न(5):- भक्तिन का दुर्भाग्य भी कम हठी नही था, लेखिका ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर:- भक्तिन का दुर्भाग्य उसका पीछा नहीं छोड़ता था -

1- बचपन में ही माँ की मृत्यु ।
2- विमाता (सौतेली माँ) की उपेक्षा ।
3- भक्तिन(लक्ष्मी) का बालविवाह ।
4- पिता का निधन ।
5- तीन-तीन बेटियों को जन्म देने के कारण सास और जेठानियों के द्वारा भक्तिन की उपेक्षा ।
6- पति की असमय मृत्यु ।
7- दामाद का निधन और पंचायत के द्वारा निकम्मे तीतरबाज युवक से भक्तिन की विधवा बेटी का जबरन विवाह ।
8- लगान न चुका पाने पर जमींदार के द्वारा भक्तिन का अपमान।

प्रश्न(6):- भक्तिन ने महादेवी वर्मा के जीवन को कैसे प्रभावित किया?

उत्तर- भक्तिन के साथ रहकर महादेवी की जीवन-शैली सरल हो गयी, वे अपनी सुविधाओं की चाह को छिपाने लगीं और असुविधाओं को सहने लगीं। भक्तिन ने उन्हें देहाती भोजन खिलाकर उनका स्वाद बदल दिया। भक्तिन मात्र एक सेविका न

होकर महादेवी की अभिभावक और आत्मीय बन गयी। भक्तिन, महादेवी के जीवन पर छा जाने वाली एक ऐसी सेविका है जिसे लेखिका नहीं खोना चाहती थी।